लखनऊ
सोमवार, 03 अक्टूबर 2022
वर्षः-6 अंकः-62
पृष्ठः-8 मूल्यः- 2 रुपये
RNI- UPHIN/2016/74800

हिन्दी साप्ताहिक

करण वाणी

नई सोच, नया जुनून.....

जिस इंसान के कर्म अच्छे होते है उस के जीवन में कभी अँधेरा नहीं होता

दुर्गा पूजा पंडाल में लगी भीषण आग

3 बच्चे समेत 5 जिंदा जले, झुलसे लोगों के लिए बना ग्रीन कॉरीडोर

करण, वाणी न्यूज

उत्तर प्रदेश के भदोही में रविवार शाम को भीषण हादसा हो गया। यहां एक दुर्गा पंडाल में आग लगने से अब तक 5 लोगों की मौत हो गई। इनमें 3 बच्चे और 2 महिला शामिल हैं। वहीं 47 की हालत गंभीर है। इनके अलावा 15 लोग मामूली रूप झुलसे हैं। इन सभी को वाराणसी के इल्व रेफर किया गया है। हादसा औराई क्षेत्र के नरथुआ में हुआ है। बताया जा रहा है कि हादसे के वक्त पंडाल में करीब डेढ़ सौ लोग मौजूद थे।

पुलिस के मुताबिक, आग उस समय लगी जब पंडाल में भगवान शंकर और काली मां के नाटक का मंचन चल रहा था। इससे अफरा-तफरी मच गई। लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। भीड़ ज्यादा होने की वजह से लोग जब तक बाहर निकलते, उससे पहले आग की चपेट में आ गए। आसपास के लोगों ने किसी तरह से लोगों को बाहर निकाला।??? एक प्रत्यक्षदर्शी महिला बुद्धी ने बताया कि शॉर्ट-सर्किट की वजह से आग लगी। इसके बाद पूरे पंडाल में फैल गई।

पूजा अनुमति के बावजूद फायर ब्रिगेड की गाड़ी खड़ी नहीं थी

दुर्गा पूजा की अनुमति ली गई थी। मगर, परिसर के आस-पास अग्निशमन विभाग की फायर ब्रिगेड नहीं खड़ी थी। 20 मिनट के बाद फायर ब्रिगेड की टीम मौके पहुंची। 2 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इसके बाद घायलों को एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया गया।

बताया जा रहा है कि अंदर माता जी की गुफा जैसा पंडाल था। एक तरफ माता जी की मूर्ति लगी थी। प्रत्यक्षदर्शी विनय कहते हैं, शंकर और काली मां की लीला का मंचन हो रहा था। आरती का समय हो चला था। इसलिए पंडाल में 150 से 200 लोग मौजूद थे। अचानक आग लग जाती है। आग देखकर हम लोग दौड़कर पहुंचे। पर्दा खींचकर फाड़ दिए, ताकि लोग बाहर भाग सकें।

एक और महिला ने बताया, 'पंडाल में बहुत तेजी से आग फैली थी। आग की लपटें ऊपर तक जा रही थीं। लोग खुद ही बचाव के लिए आ गए। पानी डालने लगे। किसी तरह लोगों को बचाया गया।'

जांच के लिए एसआईटी बनी, 4 दिन में देगी रिपोर्ट

भदोही के डीएम गोरांग राठी ने घटना की जांच के लिए 4 सदस्यीय एसआईटी गठित की। टीम में भदोही के अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व), अपर पुलिस अधीक्षक, एक्सईएन हाईडिल और फायर सेफ्टी ऑफिसर शामिल हैं। ये जांच टीम 4 दिन में अपनी रिपोर्ट देगी। उद्द गौरंग राठी ने कहा कि शॉर्ट सर्किट की वजह आग लगने की आशंका है।

दमकल विभाग के एक सीनियर अफसर ने बताया, "पंडाल को गुफा जैसा बनाया गया था। गुफा को बर्फीला-पथरीला और ऊबड़-खाबड़ दिखाने के लिए उसमें सिल्वर फॉयल जैसी पन्नी लगाई गई थी। घटना के वक्त पंडाल में बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। इसी दौरान एक वायर में स्पार्किंग हुई और आग लग गई। पंडाल में सिल्वर फॉयल लगे होने की वजह आग ने कुछ ही सेकेंड में सबकुछ अपने जद में ले लिया।"

हादसे में मारे गए लोगों की लिस्ट

हर्षवर्धन (8), नवीन (10), अंकुश सोनी (12), जया देवी (45) और आरती चौबे (48) हैं।

भारतीय वायुसेना को आज मिलेगी नई ताकत

करण, वाणी न्यूज

भारतीय वायुसेना को सोमवार को एक नई ताकत मिलेगी। भारतीय वायुसेना में युद्ध कौशल को बढ़ावा देने के लिए देश में विकसित हल्के लड़ाकू हेलीकॉप्टर के पहले जत्थे को आज शामिल किया जाएगा। राजस्थान के जोधपुर में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी में स्वदेशी हेलिकॉप्टरों को भारतीय वायुसेना में शामिल किया जाएगा।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट किया कि इन हेलीकॉप्टरों को शामिल करने से भारतीय वायुसेना की युद्ध क्षमता को काफी बढ़ावा मिलेगा।

राजनाथ सिंह और वायसेना प्रमुख रहेंगे मौजूद

फोर्स में शामिल होने वाला यह नया हेलिकॉप्टर हवाई युद्ध में सक्षम है और संघर्ष के दौरान धीमी गति से चलने वाले विमानों, ड्रोन और बख्तरबंद टैंकरों से निपटने में एयर फोर्स की मदद करेगा। आज के इस समारोह का नेतृत्व रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह करेंगे। इस दौरान वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी भी उपस्थित रहेंगे।रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट किया कि इन हेलीकॉप्टरों को शामिल करने से भारतीय वायुसेना की युद्ध क्षमता को

काफी बढ़ावा मिलेगा।

10 भारतीय वायुसेना और 5 थल सेना के लिए

इस साल मार्च में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडल समिति (उउर) की बैठक में स्वदेश विकसित 15 एलसीएच को 3,887 करोड़ रुपये में खरीदने की मंजूरी दी गई थी। इन 15 हेलीकॉप्टरों में से 10 भारतीय वायुसेना के लिए और पांच थल सेना के लिए हैं। अधिकारियों ने कहा कि यह हथियारों और ईंधन के साथ 5,000 मीटर की ऊंचाई पर उड़ान भर सकते हैं।

लद्दाख और रेगीस्तानी क्षेत्र में किया जाएगा तैनात

इन हेलीकॉप्टरों को सार्वजनिक उपक्रम हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (ल्एअछ) ने विकसित किया है और इसे ऊंचाई वाले इलाकों में तैनात करने के लिए प्राथमिक रूप से डिजाइन किया गया है। सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लद्दाख और रेगिस्तानी क्षेत्र में हेलिकॉप्टरों को बड़े पैमाने पर तैनात किया जाएगा। भारतीय वायुसेना ने पिछले तीन-चार सालों में चिनूक, अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर और अब एलसीएच को शामिल करने के साथ कई हेलीकॉप्टरों को अपने बेड़े में शामिल किया है।

गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना अब चिनूक हेलिकॉप्टरों में महिला पायलटों को भी तैनात कर रहा है, जो उत्तरी और पूर्वी सीमाओं पर नियमित आपूर्ति मिशन ले जा रहे हैं। वहीं, लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर लिमिटेड सीरीज प्रोडक्शन एक स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित अत्याधुनिक आधुनिक लड़ाकू हेलीकॉप्टर है।

कनाडा में फिर निशाना बना हिंदू समुदाय, अब भगवदगीता पार्क में तोड़फोड़, भारत ने जताई नाराजगी

ब्रैम्पटन के मेयर मेयर पैट्रिक ब्राउन ने इस घटना की पुष्टि करते हुए अधिकारियों ने इसकी जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में अनावरण किए गए श्री भगवदगीता पार्क के चिन्ह को तोड़ा गया है। चंद दिनों पहले ही टोरंटो म्रों स्वामीनारायण मंदिर पर भारत विरोधी नारे लिखकर उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई थी।

ओटावाः कनाडा में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा रुकने का नाम नहीं ले रही। अब ब्रैम्पटन शहर में मौजूद भगवदगीता पार्क के प्रतीक चिन्ह को नुकसान पहुंचाया गया है। ब्रैम्पटन के मेयर मेयर पैट्रिक ब्राउन ने इस घटना की पुष्टि करते हुए अधिकारियों ने इसकी जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में अनावरण किए गए श्री भगवदगीता पार्क के चिन्ह को तोड़ा गया है। चंद दिनों पहले ही टोरंटो में स्वामीनारायण मंदिर पर भारत विरोधी नारे लिखकर उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई थी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत समेत दुनियाभर के देशों को धार्मिक स्वतंत्रता पर ज्ञान देते रहते हैं। अब उन्हीं के देश में एक धर्म विशेष को जान बूझकर प्रताड़ित किया जा रहा है और ट्रूडो एक बार भी इसकी निंदा नहीं कर रहे।

भारतीय उच्चायोग ने जताई नाराजगी

भारतीय उच्चायोग ने ट्वीट कर कहा कि हम ब्रैम्पटन में श्री भगवदगीता पार्क में घृणा अपराध की निंदा करते हैं। उच्चायोग ने कहा कि हम कनाडा के अधिकारियों और पुलिस से जांच करने और अपराधियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करने का आग्रह करते हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय ने चंद दिनों पहले ही कनाडा में रहने वाले भारतीय नागरिकों और छात्रों को सचेत और चौकस रहने की सलाह दी थी। मंत्रालय ने कहा था कनाडा में घृणा अपराध, नस्ली हिंसा और भारत विरोधी गतिविधियों से जुड़ी घटनाओं में तीव्र वृद्धि हुई है।

टोरंटो के स्वामीनारायण मंदिर पर भी हुआ था हमला

15 सितंबर को टोरंटो के बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर में भारत विरोधी नारे लिखकर उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश क थी। मंदिर के गेट के एक सिरे पर 'खालिस्तान जिंदाबाद' और दूसरे सिरे पर 'हिंदुस्तान मुदार्बाद' लिखा गया था। इस घटना पर कनाडा के भारतीय समाज ने कड़ी नाराजगी जताई थी। कनाडाई सांसद चंद्र आर्या ने कहा था कि कनाडा के खालिस्तानी चरमपंथियों द्वारा टोरंटो के बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर को विरूपित किए जाने की घटना की सभी को निंदा करनी चाहिए। यह सिर्फ एक अकेली घटना नहीं है। कनाडा के हिंदू मंदिरों को हाल के दिनों में इस तरह के कई घृणा अपराधों का सामना करना पड़ा है। इन घटनाओं को लेकर कनाडा के हिंदुओं की चिंताएं जायज हैं।र

राज्यपाल ने महात्मा गाँधी और लालबहादुर शास्त्री जी को किया नमन

करण, वाणी न्यूज

लखनऊ। प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने आज यहाँ राजभवन में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और भारत के पूर्व प्रधानंमत्री लालबहादुर शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर उनके चित्रों एवं प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा पुष्प अर्पित कर नमन किया और सभी को बधाई दी। राज्यपाल जी के साथ प्रदेश के लोकनिर्माण विभाग के मंत्री श्री जितिन प्रसाद, प्रमुख सचिव राज्यपाल श्रीमती कल्पना अवस्थी, विशेष सचिव श्री बद्रीनाथ सिंह, कानूनी सलाहकार न्यायमूर्ति प्रशान्त मिश्र, विशेष कार्याधिकारी शिक्षा श्री पंकज जॉनी सहित राजभवन के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

भारतवासियों के प्रिय और सदैव स्मरणीय बापू जी और शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर राजभवन के गाँधी सभागार में राजभवन अध्यासितों के बच्चों तथा भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सद्भाव प्रार्थना एवं वैष्णव गीत की मनमोहक सह-प्रस्तुतियाँ दी।

गहलोत गुट ने पायलट को लेकर खींची लक्ष्मण रेखा, आलाकमान के सामने रखीं ये 3 शर्तें

करण, वाणी न्यूज

सोनिया गांधी ने अजय माकन और मल्लिकार्जुन खड़गे से राजस्थान में इस्तीफा सौंपने वाले कांग्रेस के 82 विधायकों से वन-टू-वन बात कर रात में ही फैसला बताने के लिए कहा था. पर्यवेक्षक देर रात तक विधायकों को मनाने की कोशिश करते रहे लेकिन विधायकों ने आलाकमान के सामने कुछ शर्तें रख दीं. इससे पहले वो बात करने को तैयार नहीं हैं.

राजस्थान में नए मुख्यमंत्री के नाम को लेकर रविवार को फैसला होना था. इसके लिए विधायक दल की बैठक बुलाई गई थी लेकिन फैसला होने से पहले ही एकाएक कांग्रेस के 82 विधायकों ने इस्तीफा सौंप दिया है. सूत्रों के मुताबिक मामले को ठंडा करने के लिए कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने अशोक गहलोत को फोन किया लेकिन गहलोत ने हाथ खड़े कर दिए.

नाराज विधायकों ने रखीं ये तीन शर्तें

- अशोक गहलोत अध्यक्ष चुनाव के बाद उट पद से इस्तीफा देंगे यानी सीएम उम्मीदवार की घोषणा 18 अक्टूबर के बाद की जाए.

- जो भी मुख्यमंत्री बनेगा वो उन 102 विधायकों में से हो जिन्होंने 2020 में सचिन पायलट की बगावत के दौरान सरकार गिरने से बचाने का काम किया था(

राजस्थान के मंत्री महेश जोशी ने कहा कि अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी पर हर विधायक को भरोसा है. हमने अपनी बात रखी है और उम्मीद है कि आलाकमान अंतिम निर्णय लेते समय हमारी मांगों पर विचार करेगा. हम चाहते हैं कि पार्टी उन लोगों का ख्याल रखे जो कांग्रेस के लिए वफादार रहे हैं.

नाराज विधायकों ने सीपी जोशी को सीएम बनाने की मांग की

इस्तीफा देने वाले 82 विधायकों ने आरोप लगाया कि सीएम के चयन में उनकी राय नहीं ली गई. प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा है कि 10-15 विधायकों (पायलट समर्थकों) की सुनवाई हो रही है, जबकि अन्य विधायकों (गहलोत समर्थकों) की उपेक्षा हो रही है. नाराज विधायकों ने स्पीकर सीपी जोशी को मुख्यमंत्री बनाने की मांग की है।

गहलोत खेमे के विधायकों से जब दोबारा बातचीत के लिए कहा गया तो वे बोले बैठक अब नहीं होगी. उनकी मुलाकात हो चुकी है. सभी ने विधायक शांति धारीवाल के आवास पर इस्तीफा दिया है, जिसे बाद में विधानसभा अध्यक्ष को सौंप दिया गया।

विधायक बाबूलाल नागर ने कहा कि अशोक गहलोत को पार्टी अध्यक्ष बनने दें, उसके बाद आलाकमान जो भी फैसला करेगा, वह स्वीकार्य होगा.

विधायकों ने गहलोत को ही माना अपना नेता

कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि विधायकों ने अशोक गहलोत को ही अपना नेता माना है. निर्दलीय विधायक संयम लोढ़ा ने कहा कि अगर विधायकों की इच्छा के आधार पर ही मुख्यमंत्री का चयन होता है तो सरकार ठीक तरह से चलती रहेगी. अगर ऐसा नहीं होता है तो सरकार गिरने का खतरा है.

कांग्रेस के खिलाफ बगावत करने पर पायलट को घेरा

लोकदल कोटे से राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने पायलट का नाम लिए बिना उन पर हमला बोला. गर्ग ने कहा, 'जिन लोगों (पायलट) ने 2 साल पहले सरकार गिराने की कोशिश की, उन्हें प्रदेश की कमान सौंपने की तैयारी की जा रही है. इससे पार्टी और सरकार दोनों कमजोर हो सकते हैं।

गर्ग ने आगे कहा, 'जिन 102 विधायकों ने सरकार बचाई थी, उनका क्या? कांग्रेस को उनकी भावनाओं का भी खयाल रखना चाहिए, जो दो महीने तक घर छोड़कर होटलों में बाड़ेबंदी के अंदर रहे. हमने सरकार बनाने में सहयोग किया. सहयोगी दलों से पूछा जाना चाहिए कि आगे सरकार कैसे बचेगी।

वहीं सोनिया गांधी ने अजय माकन और मल्लिकार्जुन खड़गे को नाराज विधायकों के साथ आमने-सामने बातचीत करने का निर्देश दिया. विधानसभा अध्यक्ष के आवास पर देर रात तक दोनों ने विधायकों को मनाने की कोशिश की. बात नहीं बनी और सभी विधायक अपने घर चले गए।

सूत्रों के मुताबिक घर जाने से पहले विधायकों ने आलाकमान के सामने तीन शर्तें रखी हैं. सूत्रों ने बताया कि नाराज विधायकों का कहना है कि जब तक इस बात पर सहमति नहीं बनेगी तबतक कोई विधायक बैठक में शामिल नहीं होगा।

आशा पारेख दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित

आशा पारेख दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित, राष्ट्रपति और पीएम मोदी ने दी बधाई 'अदम्य नारी शक्ति' के लिए भी सम्मान है।

करण, वाणी न्यूज

गुजरे जमाने की बेहतरीन अदाकारा आशा पारेख को भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार से शुक्रवार को सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने यहां विज्ञान भवन में आयोजित 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में 79 वर्षीय आशा पारेख को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया। वरिष्ठ अभिनेत्री ने कहा कि वह अपने 80वें जन्मदिन से एक दिन पहले यह पुरस्कार पाकर धन्य महसूस कर रही हैं। पिछले साल, 2019 के लिए अभिनेता रजनीकांत को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उन्होंने कहा, 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करना बहुत बड़े सम्मान की बात है। मेरे 80वें जन्मदिन से ठीक एक दिन पहले मुझे यह सम्मान मिला, मैं इसके लिए आभारी हूं।' वर्ष 2020 के लिए यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली आशा पारेख ने कहा, 'यह भारत सरकार की ओर से मुझे मिला सबसे अच्छा सम्मान है। मैं जूरी को इस सम्मान के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं।' भारतीय फिल्म जगत को बेहतरीन स्थानबताते हुए, अभिनेत्री ने कहा कि वह 60 साल बाद भी फिल्मों से जुड़ी हुई हैं।

बाल कलाकार के तौर पर अपने करियर की शुरूआत करने वाली आशा पारेख ने कहा, 'हमारा फिल्म जगत सबसे अच्छी जगह है। और मैं इस जगत में युवाओं को दृढ़ता, दृढ़ संकल्प, अनुशासन और जमीन से जुड़े रहने का सुझाव देना चाहती हूं, और मैं आज रात पुरस्कार पाने वाले सभी कलाकारों को बधाई देती हूं।' राष्ट्रपति ने सिनेमा जगत की जानी-मानी हस्ती को बधाई देते हुए कहा कि पारेख को दिया गया यह पुरस्कार 'अदम्य नारी शक्ति' के लिए भी सम्मान है।

मुर्मू ने कहा, 'मैं 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के सभी विजेताओं को बधाई देती हूं। मैं दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित की गई आशा पारेख जी को विशेष बधाई देती हूं। उनकी पीढ़ी की हमारी बहनों ने कई बाधाओं के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई।' दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की पांच सदस्यीय चयन समिति ने सम्मान के लिए पारेख का चयन किया। इस समिति में आशा भोंसले, हेमा मालिनी, पूनम ढिल्लों, उदित नारायण और टीएस नागभरण शामिल हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि पारेख ने कई महिलाओं को उनके सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'देविका रानी जी 1969 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार की पहली विजेता थीं। और आज इससे अभिनेत्री आशा पारेख को सम्मानित किया जा रहा है, जिन्होंने दशकों तक न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक दर्शकों का मनोरंजन किया। वह भारतीय संस्कृति को दुनिया के कोने-कोने तक ले गईं। आशा जी, आपने बहुत सी महिलाओं को आगे बढ़ने और सिनेमा और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।'

1960-1970 के दशक में पारेख की शौहरत उस दौर के अभिनेता राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार के बराबर थी। अपने पांच दशक लंबे करियर में अभिनेत्री ने 95 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। इनमें 'दिल देके देखो', 'कटी पतंग', 'तीसरी मंजिल', 'बहारों के सपने,' 'प्यार का मौसम' और 'कारवां' जैसी फिल्में शुमार हैं।मुर्मू ने कहा, 'मैं 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के सभी विजेताओं को बधाई देती हूं। मैं दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित की गई आशा पारेख जी को विशेष बधाई देती हूं। उनकी पीढ़ी की हमारी बहनों ने कई बाधाओं के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई।' दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की पांच सदस्यीय चयन समिति ने सम्मान के लिए पारेख का चयन किया। इस समिति में आशा भोंसले, हेमा मालिनी, पूनम ढिल्लों, उदित नारायण और टीएस नागभरण शामिल हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि पारेख ने कई महिलाओं को उनके सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'देविका रानी जी 1969 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार की पहली विजेता थीं। और आज इससे अभिनेत्री आशा पारेख को सम्मानित किया जा रहा है, जिन्होंने दशकों तक न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक दर्शकों का मनोरंजन किया। वह भारतीय संस्कृति को दुनिया के कोने-कोने तक ले गईं। आशा जी, आपने बहुत सी महिलाओं को आगे बढ़ने और सिनेमा और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।'

1960-1970 के दशक में पारेख की शौहरत उस दौर के अभिनेता राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार के बराबर थी। अपने पांच दशक लंबे करियर में अभिनेत्री ने 95 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। इनमें 'दिल देके देखो', 'कटी पतंग', 'तीसरी मंजिल', 'बहारों के सपने,' 'प्यार का मौसम' और 'कारवां' जैसी फिल्में शुमार हैं।मुर्मू ने कहा, 'मैं 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के सभी विजेताओं को बधाई देती हूं। मैं दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित की गई आशा पारेख जी को विशेष बधाई देती हूं। उनकी पीढ़ी की हमारी बहनों ने कई बाधाओं के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई।' दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की पांच सदस्यीय चयन समिति ने सम्मान के लिए पारेख का चयन किया। इस समिति में आशा भोंसले, हेमा मालिनी, पूनम ढिल्लों, उदित नारायण और टीएस नागभरण शामिल हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि पारेख ने कई महिलाओं को उनके सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'देविका रानी जी 1969 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार की पहली विजेता थीं। और आज इससे अभिनेत्री आशा पारेख को सम्मानित किया जा रहा है, जिन्होंने दशकों तक न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक दर्शकों का मनोरंजन किया। वह भारतीय संस्कृति को दुनिया के कोने-कोने तक ले गईं। आशा जी, आपने बहुत सी महिलाओं को आगे बढ़ने और सिनेमा और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।'

1960-1970 के दशक में पारेख की शौहरत उस दौर के अभिनेता राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार के बराबर थी। लंबे करियर में अभिनेत्री ने 95 से ज्यादा फिल्मों में काम किया।

दूसरे दिन भी नहीं चला ऋतिक-सैफ की फिल्म का जादू

विक्रम वेधा का दूसरे दिन का कलेक्शन सामने आ गया है. फिल्म ने दूसरे दिन कुछ खास बिजनेस नहीं किया है।

करण, वाणी न्यूज

लंबे इंतजार के बाद ऋतिक रोशन और सैफ अली खान की फिल्म विक्रम वेधा सिनेमाघरों पर रिलीज हो चुकी है. इस फिल्म का फैंस को बेसब्री से इंतजार था. अब ये इंतजार खत्म हो चुका है मगर बॉक्स ऑफिस पर कुछ कमाल नहीं दिखा पा रही है. विक्रम वेधा को पॉजिटिव रिव्यू मिले हैं फिर भी ऑडियन्स इस फिल्म को देखने में इतना इंटरेस्ट नहीं ले रही है. फिल्म ने पहले दिन कुछ खास बिजनेस नहीं किया था. दूसरे दिन विक्रम वेधा से बेहतर बिजनेस की उम्मीद की जा रही थी मगर दूसरे दिन भी कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई है. विक्रम वेधा का दूसरे दिन का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन सामने आ गया है.

ऋतिक रोशन और सैफ अली खान के साथ विक्रम वेधा में रोहित सराफ और राधिका आप्टे भी अहम किरदार निभाते नजर आए हैं. इस फिल्म को पुष्कर-गायत्री ने डायरेक्ट किया है. फिल्म में ऋतिक और सैफ की लव-हेट केमिस्ट्री दिखाई गई है. दूसरे

दिन विक्रम वेधा के कलेक्शन में ज्यादा बढ़ोत्तरी नहीं हुई है. आइए आपको कलेक्शन के बारे में बताते हैं।

ऋतिक रोशन और सैफ अली खान की फिल्म का दूसरे दिन का कलेक्शन सामने आ गया है. ट्रेंड्स के मुताबिक फिल्म ने दूसरे दिन करीब 12.50-14 करोड़ का बिजनेस किया है. फिल्म ने पहले दिन 10.58 करोड़ का बिजनेस किया था. जिसके बाद टोटल कलेक्शन करीब 22-23 करोड़ हो जाएगा.

रिपोर्ट्स की माने तो अब कलेक्शन बढ़ने की उम्मीद रविवार को की जा रही है. उम्मीद की जा रही है फिल्म पहले वीकेंड तक 40 करोड़ के क्लब में शामिल हो जाएगी.

विक्रम वेधा की बात करें तो ये इसी नाम से साल 2017 में आई तमिल फिल्म का हिंदी रीमेक है. तमिल फिल्म में आर माधवन और विजय सेतुपति लीड रोल में नजर आए थे. इसे भी पुष्कर और गायत्री ने डायरेक्ट किया था. विक्रम वेधा में ऋतिक रोशन गैंगस्टर और सैफ अली खान पुलिस ऑफिसर के किरदार में नजर आए है।

जरबेरा फूल की खेती से होंगे मालामाल

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। फूलों की खेती किसानों के लिए मुनाफेदार साबित होती है, क्योंकि फूलों की मांग हर मौसम और समारोह में रहती है, फूलों का इस्तेमाल सजावट के लिए भी किया जाता है, इस लेख में एक ऐसे फूल की खेती की जानकारी देने जा रहे हैं, जिससे आप कम समय में मालामाल हो सकते हैं।

दरअसल, भारत में जरबेरा नाम के एक फूल की खेती होती है, जिसकी खेती पूरी दुनिया में की जाती है. और ये सजावटी पौधों के रूप में व्यापक रूप से लोकप्रिय है. फूलों का उपयोग गुलदस्ते बनाने और विभिन्न सजावट उद्देश्यों के लिए किया जाता है. वहीं, भारत की बात करें, तो जरबेरा फूल की खेती (हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर और अन्य हिमालयी क्षेत्रों जैसे राज्यों में की जाती है, जरबेरा के फूल की एक अच्छी बात यह है कि इसे 'ग्रीनहाउस फार्मिंग' के जरिए पूरे भारत में उगाया जा सकता है।

जरबेरा फूल का परिचय

वैज्ञानिक तौर पर जरबेरा फूल के परिवार का है, जरबेरा के फूल चमकीले रंग के होते हैं, जिनमें पंखुड़ियों से घिरा एक सुनहरा केंद्र होता है, जिस पर पंखुड़ियां किरणों की तरह लगती हैं. जरबेरा फूल को आमतौर पर अफ्रीकी डेजी या जरबेरा डेजी कहा जाता है. जरबेरा फूल बहुत मांग में है, क्योंकि ये बिना किसी ताजगी के लंबे समय तक चल सकते हैं, इसलिए इनका उपयोग शादियों, पार्टियों और समारोहों में व्यापक रूप से किया जाता है।

जलवायु की आवश्यकता

जरबेरा की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय स्थितियां दोनों उपयुक्त होती हैं. लेकिन, ध्यान दें उपोष्णकटिबंधीय जलवायु के

मामले में इसे पाले से बचाना चाहिए, क्योंकि यह पाले के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं।

तापमान की आवश्यकता

जरबेरा फूल की खेती के लिए सबसे आदर्श तापमान दिन का 22 से 25त्उ के बीच और रात का तापमान 12 से 16त्उ के बीच उचित होता है।

मिट्टी की आवश्यकता

जरबेरा फूलों की खेती के लिए सूखी मिट्टी की जरूरत होती है. चूँकि, इसके पौधे की जड़ों की लंबाई 70 सेमी होती है, इसलिए मिट्टी में आसानी से घुसने योग्य होनी चाहिए, साथ ही बहुत छिद्रपूर्ण होनी चाहिए।

मिटटी का बंध्याकरण

वहीँ, फूलों के रोपण में मृदा बंध्याकरण एक महत्वपूर्ण कार्य होता है. मिटटी में कई ऐसे कीटाणु पाए जाते हैं, जो फसलों को बर्बाद कर देते हैं, इसलिए मिटटी का बंध्याकरण बहुत जरुरी होता है।

खाद प्रक्रिया

अच्छी उपज और पौधों के विकास के लिए खाद एक महत्वपूर्ण कदम है. इसके लिए हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए, मिटटी में पहले तीन महीनों के लिए नाइट्रोजन, फॉस्फेट, पोटेशियम की मात्रा इस 12:15:20 ग्राम अनुपात में डालना चाहिए, वहीँ चौथे महीने में खाद का अनुपात नाइट्रोजन, फॉस्फेट, पोटेशियम 15:10:30 ग्राम/वर्ग मीटर होना चाहिए, कैल्शियम, मैग्नीशियम, तांबा जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव 0.15 प्रतिशत - महीने में एक बार किया जाता है।

कटाई

आमतौर पर, जरबेरा के पौधे रोपण के तीन महीने के भीतर फूलना शुरू कर देते हैं, लेकिन, रोपण के बाद शुरूआती दो महीनों में यदि पौधे में कलियां आती हैं, तो उसे तोड़ दिया जाता है. पहले दो महीनों के बाद विकसित होने वाली कलियां फूलों में विकसित होने लगती हैं, जब फूल पूरी तरह से खिल जाते हैं, तो उन्हें काटा जाता है. जब फूल पूरी तरह खिल जाते हैं, तो बाहरी डिस्क को फूल डंठल को फूलों से काटा जाता है और कुछ घंटों के लिए सोडियम हाइपोक्लोराइट के घोल में धोया जाता है, इसके बाद में आकार, छाया के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है और फिर पैक किया जाता है, फूलों को पहले पॉली पाउच में पैक किया जाता है और उन्हें कार्डबोर्ड बॉक्स में पंक्तियों में सेट किया जाता है।

सूरजमुखी की खेती, दोगुना मुनाफा

सूरजमुखी को तिलहन फसलों की श्रेणी का माना जाता है, सूरजमुखी की खेती के लिए खेत को तैयार करने के लिए लगभग 2-3 जुताई की जरूरत होती है, इसकी खेती कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और बिहार में व्यापक रूप से की जाती है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। रबी के सीजन की शुरूआत हो चुकी है, इस सीजन में मुख्य रूप से ज्वार और गेंहूं की खेती की जाती है. हालांकि, पिछले कुछ समय से किसान इन फसलों के माध्यम से मनचाहा मुनाफा नहीं कमा पा रहे हैं. ऐसे में भारत सरकार भी किसानों को नई फसलों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, यही वजह है किसानों में सूरजमुखी जैसे फूलों की खेती करने की आदत बढ़ी है।

इन राज्यों में होती है इसकी खेत

सूरजमुखी को तिलहन फसलों की श्रेणी का माना जाता है. इसकी खेती कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और बिहार में व्यापक रूप से की जाती है. इसके लिए रेतीली दोमट मिट्टी और काली मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है. इसके अलावा मिट्टी का पीएच 6.5 और 8.0 के बीच होना जरूरी है. सूरजमुखी की खेती के लिए खेत को तैयार करने के लिए लगभग 2-3 जुताई की जरूरत होती है।

बुवाई का समय

सूरजमुखी की बुवाई जनवरी के

अंत तक कर देनी चाहिए, यदि आप इसे फरवरी में बो रहे हैं तो बीज का प्रयोग न करें, क्योंकि इससे उपज कम हो सकती है, प्रत्यारोपण तकनीक का प्रयोग करें, पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी रखें. वहीं, पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेमी रखना सबसे उपयुक्त है।

बीज उपचार

खेतों में सूरजमुखी के बीज लगाने से पहले उसका उपचार करना बेहद जरूरी है. नहीं तो कई बीज जनित बीमारियों से आपका फसल खराब हो सकती है. सबसे पहले सूरजमुखी के बीजों को सादे पानी में 24 घंटे के लिए भिगो दें और फिर बुवाई से पहले छाया में सुखा लें. बीजों पर थीरम 2 ग्राम प्रति किग्रा और डाउनी फफूंदी से बचाव के लिए मेटालैक्सिल 6 ग्राम प्रति किलो जरूर छिड़कें।

कितनी सिंचाई की जरूरत?

आमतौर पर सूरजमुखी की फसल के लिए 9-10 सिंचाइयां आदर्श होती हैं. बार-बार सिंचाई करने से बचें, क्योंकि इससे जड़ सड़ने और मुरझाने का खतरा बढ़ सकता है. भारी मिट्टी को 20-25 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है, हल्की मिट्टी को 8-10 दिनों के अंतराल पर जरूरत पड़ती है.

ऐसे बढ़ाएं पौधे का विकास

मधुमक्खियां सूरजमुखी की फसल की आदर्श परागणक होती हैं, यदि मधुमक्खियां नहीं हैं, तो वैकल्पिक दिन सुबह के समय हाथ से परागण करना अच्छा होता है, इसके अलावा फसल की खेती के पहले 45 दिनों में आपको खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए, ऐसा करने पर आपके फसल के विकास में तेजी आ जाएग।

फसल काटने का समय

सूरजमुखी की फसल तब काटी जाती है जब सभी पत्ते सूख जाते हैं और सूरजमुखी के सिर का पिछला भाग नींबू पीला हो जाता है, देर करने पर दीमक का हमला हो सकता है और फसल बर्बाद हो सकती है।

सूरजमुखी के पौधे से तेल निकालने के अलावा दवाओं तक में इसका उपयोग होता है, ऐसे में ऊपर बताए गए तरीकों से इसकी खेती करने पर किसान भाई दोगुना लाभ कमा सकते हैं।

एक एकड़ में लगा दें120 पेड़, 12 साल में बन जाएंगे करोड़पति

किसानों के लिए महोगनी की खेती एक मुनाफे का सौदा है, महोगनी के 120 पेड़ अगर एक एकड़ जमीन में लगाए जाएं तो सिर्फ 12 साल में आप करोड़पति बनने का सपना पूरा कर सकते हैं, महोगनी को सदाबहार पेड़ माना जाता है, यह 200 फीट की ऊंचाई तक बढ़ सकते हैं।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। भारत में किसान ज्यादातर पारंपरिक खेती को तरजीह देते हैं, ऐसे में अक्सर वे खेती-किसानी में नुकसान उठाते हैं. इन्हीं सब वजह से कृषि विशेषज्ञ किसानों को खेतों में पेड़ लगाने की सलाह देते हैं, यहां हम आपको बताने जा रहे हैं कि महोगनी के पेड़ों की खेती से आप करोड़पति कैसे बन सकते हैं।

किसानों के लिए महोगनी की खेती एक मुनाफे का सौदा है, महोगनी के 120 पेड़ अगर एक एकड़ जमीन में लगाए जाएं तो सिर्फ 12 साल में आप करोड़पति बनने का सपना पूरा कर सकते हैं. महोगनी को सदाबहार पेड़ माना जाता है. यह 200 फीट की ऊंचाई तक बढ़ सकते हैं. इसकी

लकड़ी लाल और भूरे रंग की होती है और इसे पानी से नुकसान नहीं पहुंचता है।

महोगनी के पेड़ कैसे उगाएं?

महोगनी के पौधे ऐसे स्थान पर उगाए जाते हैं जहां तेज हवाओं का खतरा कम होता है. भारत में इन्हें पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर कहीं भी उगाया जा सकता है। ऐसी भूमि जिसमें प्राकृतिक रूप से उपजाऊ मिट्टी, अच्छी जल निकासी और सामान्य पीएच हो, वह इस पौधे के लिए एकदम सही है।

महोगनी के पेड़ों का उपयोग

महोगनी के पेड़ को बहुत कीमती माना जाता है, इसे तैयार होने में 12 साल लगते हैं, यह बेहद मजबूत और टिकाऊ है. यहां तक कि पानी का भी उस पर कोई असर नहीं होता है. इसलिए इसका उपयोग जहाज, गहने, फर्नीचर, प्लाईवुड, सजावट और मूर्तियां बनाने में किया जाता है. इसके साथ ही इस पेड़ की पत्तियों में कैंसर, रक्तचाप, अस्थमा, सर्दी और मधुमेह सहित कई बीमारियों के खिलाफ उपचारात्मक गुण होते हैं।

महोगनी के पेड़ की पत्तियों में एक खास तरह का गुण पाया जाता है, जिससे इसके पेड़ों के पास मच्छर और कीड़े नहीं आते हैं. यही वजह है कि इसकी पत्तियों और बीजों के तेल का इस्तेमाल मच्छर भगाने वाले और कीटनाशक बनाने में किया जाता है, इसके तेल का इस्तेमाल साबुन, पेंट, वार्निश और कई तरह की दवाइयां बनाने में किया जाता है।

महोगनी खेती से कमाई

महोगनी के पेड़ 12 साल में लकड़ी की फसल के लिए तैयार हो जाते हैं और पांच साल में एक बार बीज देते हैं इसके बीजों की कीमत बहुत अधिक होती है और ये एक हजार रुपये प्रति किलो तक बिक जाते हैं जबकि इसकी लकड़ी 2000 से 2200 रुपये प्रति क्यूबिक फीट थोक में आसानी से मिल जाती है. यह एक औषधीय पौधा भी है, इसलिए इसके बीजों और फूलों का उपयोग औषधि बनाने के लिए किया जाता है. ऐसे में इसकी खेती से करोड़ों का मुनाफा कमा सकते हैं।

कलयुगी राच्छसन का अमन-चैन ते दिक्कत हय

चतुरी चाचा के प्रपंच चबूतरे से.....

नागेन्द्र बहादुर सिंह चौहान
स्वतंत्र पत्रकार

चतुरी चाचा ने प्रपंच का श्रीगणेश करते हुए कहा- हमरी यू समझ नाय आवथय कि भारत म देवासुर संग्राम आखिर कब तलक चलि। हजारन साल तौ देउता असुरन ते लड़िन। वहिके बादि ते अदमी लड़ि रहा। भारत म रक्तबीज क तिना असुर पइदा होय रहे। पहिले समाज का दुःख-द्वंद देय वालेन का राच्छस, असुर, निशाचर कहा जात रहय। अब वनहिंका उग्रवादी, आतंकवादी, माफिया कहा जात हय। पहिले देउता सगरी धरती प राच्छ्सन ते लड़त रहयँ। अब मनुष्य जगह-जगह लड़ि रहा। बाति सगरी वहय। इनते मानवता का खतरा तबहूँ रहय। अउ अबहूँ हय। इ कलयुगी असुर ते धरती कांप रही। भइय्या जहां द्याखव हुआँ आफत मचाय हयँ। अब तौ संगठन बनायक मनमानी कय रहे। अलकायदा, तालिबान, पीएफआई जाने कौने-कौन नाव त असुर मंडली बनी हयँ। इ ससुरे मारकाट, बम विस्फोट, गोलाबारी, आत्मघाती हमला करत हयँ। कलयुगी राच्छ्सन का बस अमन-चैन ते दिक्कत हय।

चतुरी चाचा आज अपने चबूतरे पर चिंतन मुद्रा में बैठे थे। कासिम चचा, मुंशीजी, ककुवा, बड़के दद्दा मुसलमानों के पीएफआई नामक संगठन को बैन किये जाने पर कानाफूसी कर रहे थे। पुरई पशुओं को चारापानी कर रहे थे। गाँव के बच्चे कबड्डी खेल रहे थे। आज सुबह मौसम बहुत ही बढ़िया था। खुले आसमान से सूरज चबूतरे का नजारा देख रहा था। चबूतरे की क्यारियों के तमाम फूल पुरवाई में मदमस्त झूम रहे थे। मेरे चबूतरे पर पहुंचते ही चतुरी चाचा ने प्रपंच का आगाज कर दिया। उनका कहना था कि संसार में शुरू से ही आसुरी ताकतें मानवता के कष्टकारी रही हैं। पहले हजारों साल देवताओं ने राच्छ्सों से युद्ध किया। उसके बाद मनुष्यों को कलयुगी राच्छ्सों से जंग लड़नी पड़ रही है। सतयुग, त्रेता व द्वापर युग में सभ्य समाज को प्रताड़ित करने वाले लोगों को असुर, निशाचर, राच्छ्स कहा जाता था। कलयुग में ऐसे लोगों को उग्रवादी, आतंकवादी, माफिया कहा जाता है। इन समाज विरोधी तत्वों से मानव मात्र हमेशा पीड़ित रहा है। अब तो यह लोग संगठन बनाकर काम कर रहे हैं। अलकायदा, तालिबान, पीएफआई और जाने कितने नाम होंगे। इनको सिर्फ समाज की सुख-शांति से कष्ट रहता है।

ककुवा बोले- चतुरी भाई, याक बात हमहुँ का समझ नाय आवथय। उह यू कि दुनिया भरेम जतनी अशांति हय। सगरी मुसलमानन केरी वजह ते हय। आखिर इन लोगन का अमन-चैन ते दिक्कत काहे हय? इ लोग मारकाट, लूटपाट, हत्या, बलात्कार, हिंसा, उपद्रव, अग्निकांड, तस्करी, अपहरण अउ अन्य तमाम अपराधन म सक्रिय रहत हयँ। जबरन लोगन का मुसलमान बनावा चाहत हय। युहु कौनव धरम आय। देस 1947 म आजाद भा। मुसलमान बोले हमका अलग देस चही। गांधीजी दुई देस बनवाय दीहिन। पाकिस्तान अउ बंग्लादेश वाला हिस्सा भारत ते निकरिगा। बंटवारा क बादि कुछु मुस्लिम आबादी भारत म बची रहय। हम पंच वसुधैव कुटुम्बकम जइस विचारधारा वाले हन। सगरी धरती का अपन परिवार समझित हय। बंटवारा क समय जउन मुसलमान पाकिस्तान नाइगे। आज वनहिन कय आबादी लगभग 30 करोड़ होइगै। विदेशी आतंकी संगठन हिंया क मुस्लिम जवानन का जेहादी अउ आत्मघाती बनाय रहे। पीएफआई जइस संगठन भारत का 2047 म मुस्लिम राष्ट्र बनावयक सपन देखि रहा। अखबार म खबरय पढ़िके हमार तौ मन बड़ा खट्टा होइगा।

इसी बीच चंदू बिटिया हम प्रपंचियों के लिए जलपान लेकर आ गयी। आज जलपान में मक्के के उबले भुट्टे, काला नमक, नींबू, केला, सेब और तुलसी-अदरक वाली कड़क चाय थी। ककुवा व चतुरी चाचा को छोड़कर सबने नमक-नींबू लगाकर भुट्टे खाये। चाचा व ककुवा का नवरात्र व्रत चल रहा है। इसलिए उन दोनों बुजुर्गों ने केला और सेब खाया। फिर कुल्हड़ वाली चाय के साथ प्रपंच आगे बढ़ गया।

बड़के दद्दा ने मुस्लिम आतंकवाद की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- केंद्र में अगर कांग्रेस सरकार ही होती तो अबतक भारत की बड़ी दुर्दशा हो चुकी होती। धर्म निरपेक्ष का राग अलापते-अलापते कांग्रेस मुस्लिम आतंकियों के आगे नतमस्तक हो गयी होती। कांग्रेस को तो सिर्फ वोट चाहिए। कांग्रेसी नेताओं को केवल कुर्सी से मतलब रहता है। देश बंटे या बिगड़े या फिर गुलाम बन जाये। इससे कांग्रेस का कोई लेना देना नहीं है। राहुल दक्षिण भारत में भारत जोड़ो यात्रा का स्वाँग भर रहे है। इधर, दिल्ली में मल्लिकार्जुन खड़गे को राष्ट्रीय अध्यक्ष (कठपुतली) बनाने की रणनीति को अमली जामा पहनाया जा रहा है। इन लोगों ने ही पीएफआई जैसे खतरनाक मुस्लिम संगठन को खाद-पानी देकर पाला है। पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया नामक यह संगठन मुस्लिम देशों से हर साल करोड़ों रुपये का चंदा लेता है। यह संगठन भारत को इस्लामिक देश बनाने पर जुटा है। पीएफआई ने आरएसएस की तर्ज पर अपने तमाम फ्रंटल भी गठित किये हैं।

> संसार में शुरू से ही आसुरी ताकतें मानवता के कष्टकारी रही हैं। पहले हजारों साल देवताओं ने राच्छ्सों से युद्ध किया। उसके बाद मनुष्यों को कलयुगी राच्छ्सों से जंग लड़नी पड़ रही है। सतयुग, त्रेता व द्वापर युग में सभ्य समाज को प्रताड़ित करने वाले लोगों को असुर, निशाचर, राच्छ्स कहा जाता था। कलयुग में ऐसे लोगों को उग्रवादी, आतंकवादी, माफिया कहा जाता है।

कासिम चचा ने कहा- भारत का सच्चा मुसलमान कभी अपने वतन के साथ गद्दारी नहीं कर सकता है। हमारे दीन में माँ और वतन को बड़ा ही अहम दर्जा दिया गया है। वतन की मिट्टी को इतना पाक माना गया है कि पानी न मिलने की स्थिति में वतन की मिट्टी से वजू करने की हिदायत दी गयी है। हमारा धर्म कहता है कि पड़ोसी अगर भूखा है तो तुम्हारा भोजन हराम है। पड़ोसी किसी भी जाति/धर्म का हो। ऐसे में अलकायदा, तालिबान, पीएफआई या अन्य भारत विरोधी किसी भी संगठन को देश के मुसलमानों का साथ नहीं मिल सकता है। अभी देखो, 15 राज्यों में पीएफआई के 100 से अधिक ठिकानों पर एक साथ छापा पड़ा था। तमाम संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। अनेक पीएफआई वर्कर्स को जेल भेजा गया। पीएफआई की संपत्ति सील की गई। इतना ही नहीं, बल्कि केंद्र सरकार ने पीएफआई को पांच साल के लिए प्रतिबंधित भी कर दिया। इसको लेकर क्या कहीं किसी आम मुसलमान में कोई गुस्सा देखा है? चंद पीएफआई वर्करों को छोड़कर किसी मुसलमान ने कहीं कोई विरोध प्रदर्शन किया? नहीं किया न। भारत धर्म निरपेक्ष था और धर्म निरपेक्ष ही रहेगा। आतंकवाद, अलगाववाद, अपराध से आम मुसलमानों को जोड़ने की कोई जरूरत नहीं है।

मैंने कोरोना अपडेट देते हुए परपंचियों को बताया कि विश्व में अब तक करीब 62 करोड़ 29 लाख से अधिक लोग कोरोना पीड़ित हो चुके हैं। इनमें 65 लाख 48 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। वहीं, भारत में कोरोना महामारी के आंकड़ों में ठहराव आ चुका है। पूरे देश में कोरोना नियंत्रित चल रहा है। भारत में कोरोना वैक्सीन की 218 करोड़ डोज दी जा चुकी है। देश में 94.8 करोड़ आबादी को वैक्सीन की डबल डोज लग चुकी है।

अंत में चतुरी चाचा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के बारे में कुछ खास बातें बताईं। उन्होंने सबको गांधी एवं शास्त्री जयंती और विजय दशमी की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इसी के साथ आज का प्रपंच समाप्त हो गया। मैं अगले रविवार को चतुरी चाचा के प्रपंच चबूतरे पर होने वाली बेबाक बतकही के साथ फिर हाजिर रहूँगा। तब तक के लिए पँचव राम-राम!

आदित्य ठाकरे के गढ़ में एकनाथ शिंदे गुट ने लगाई सेंध

महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और एकनाथ शिंदे गुट के बीच खींचतान कम होने का नाम नहीं ले रही है। इसी कड़ी में रविवार को मुंबई वर्ली के करीब 3000 शिवसैनिकों ने एकनाथ शिंदे गुट को ज्वॉइन कर लिया।

करण, वाणी न्यूज

महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और एकनाथ शिंदे गुट के बीच खींचतान कम होने का नाम नहीं ले रही है। इसी कड़ी में रविवार को मुंबई वर्ली के करीब 3000 शिवसैनिकों ने एकनाथ शिंदे गुट को ज्वॉइन कर लिया। उद्धव गुट के लिए यह इसलिए भी बड़ा झटका है, क्योंकि आदित्य ठाकरे वर्ली इलाके से ही विधायक हैं। गौरतलब है कि दशहरा रैली को लेकर बॉम्बे हाई कोर्ट ने उद्धव गुट के पक्ष में फैसला दिया है। लेकिन शिंदे गुट ठाकरे परिवार को इसकी खुशियां नहीं मनाने दे रहा है।

उद्धव गुट के करीबियों को जोड़ रहा शिंदे गुट

गौरतलब है कि इससे पहले शिंदे गुट उद्धव के भरोसेमंद सहयोगी रहे मिलिंद नार्वेकर को अपने साथ मिलाने की तैयारी में है। उससे पहले शिंदे गुट ने ठाकरे परिवार के बेहद करीबी रहे चंपा सिंह थापा को अपने साथ जोड़ा था। गौरतलब है कि जून में महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी सरकार टूट गई थी। शिवसेना के विधायक एकनाथ शिंदे ने 39 अन्य के साथ बगावत कर दी थी। इन विधायकों ने एनसीपी और कांग्रेस के साथ शिवसेना गठबंधन का विरोध किया था। बाद में उद्धव ठाकरे ने इस्तीफा दे दिया था और भाजपा ने शिवसेना के बागी विधायकों के साथ मिलकर सरकार बनाई थी। इस सरकार में एकनाथ शिंदे को सीएम और देवेंद्र फडणवीस को डिप्टी सीएम का पद मिला है।

दोनों गुटों में टकराव

इसके बाद से ही शिवसेना के दोनों गुटों में जबर्दस्त टकराव चल रहा है। एक तरफ उद्धव गुट खुद को असली शिवसेना बताता है तो दूसरी तरफ शिंदे गुट का दावा है कि असली शिवसेना वह है। हाल ही में दशहरा रैली मनाने के अधिकार को लेकर दोनों गुटों की लड़ाई कोर्ट तक पहुंची थी। दोनों ही गुट पार्टी के स्थापना दिवस पर दशहरा रैली मनाने का दावा कर रहे हैं। हालांकि बीएमसी ने दोनों गुटों को लॉ-एंड ऑर्डर का हवाला देते हुए परमिशन देने से इंकार कर दिया था।

वजयदशमी पर दंडाधिकारी बनेंगे सीएम योगी, संतों की अदालत में सुलझाएंगे विवाद

करण, वाणी न्यूज

विजयदशमी पर सीएम योगी आदित्यनाथ बतौर गोरक्षपीठाधीश्वर दंडाधिकारी की भूमिका में होंगे। परम्परा के मुताबिक इस दिन गोरखनाथ मंदिर में संतों की अदालत लगेगी। इसमें गोरक्षपीठाधीश्वर आपसी विवाद सुलझाएंगे।

सीएम योगी आदित?यनाथ गोरखपुर में हैं। हर साल की तरह इस बार भी विजयादशमी पर गोरखनाथ मंदिर में लगने वाली संतों की आदालत में वह बतौर गोरक्षपीठाधीश?वर दंडाधिकारी की भूमिका रहेंगे। इस अदालत में वह संतों के आपसी विवाद सुलझाएंगे। साथ ही विजय शोभायात्रा की अगुवाई करेंगे।

गोरक्षपीठ में विजयदशमी का दिन एक और मायने में भी खास होता है। इस दिन यहां संतों की अदालत लगती है और दंडाधिकारी की भूमिका में होते हैं गोरक्षपीठाधीश्वर। नाथपंथ की परम्परा के अनुसार हर वर्ष विजयदशमी पर गोरखनाथ मंदिर में पीठाधीश्वर द्वारा संतों के विवादों का निस्तारण किया जाता है।

मुख्यमंत्री और गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ नाथपंथ की शीर्ष संस्था अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा के अध्यक्ष भी हैं। इसी पद पर वह दंडाधिकारी की भूमिका में होते हैं। गोरखनाथ मंदिर में विजयदशमी को पात्र पूजा का कार्यक्रम होता है। इसमें गोरक्षपीठाधीश्वर संतों के आपसी विवाद सुलझाते हैं।

नवमी को कन्या पूजन करेंगे सीएम

नवरात्र के पहले दिन गोरखनाथ मंदिर के मठ के प्रथम तल पर स्थित शक्ति मंदिर में सीएम योगी ने कलश स्थापना की थी। नवमी तिथि को सीएम दुर्गा स्वरूपा कुंवारी कन्याओं के पांव पखारकर उनका पूजन करेंगे।

विजय शोभायात्रा में सामाजिक समरसता की झलक

गोरक्षपीठ से विजयदशमी पर मंगलवार को विजय शोभायात्रा निकाली जाएगी। गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ इसकी अगुवाई करेंगे। वह गुरु गोरक्षनाथ का आशीर्वाद लेकर वाहन में सवार होंगे। तुरही, नगाड़े व बैंड बाजे की धुन के बीच गोरक्षपीठाधीश्वर की शोभायात्रा मानसरोवर मंदिर पहुंचेगी। यहां पहुंचकर गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ गोरक्षपीठ से जुड़े मानसरोवर मंदिर पर महादेव की पूजा-अर्चना करेंगे।

इसके बाद उनकी शोभायात्रा मानसरोवर रामलीला मैदान पहुंचेगी। यहां चल रही रामलीला में वह प्रभु श्रीराम का राजतिलक करेंगे। प्रतिवर्ष निकाली जाने वाली इस विजय शोभायात्रा में सामाजिक समरसता की अनुपम झलक दिखती है। इसमें हर वर्ग के लोग शामिल होते हैं। मुस्लिम व बुनकर समाज के लोगों द्वारा भी शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया जाता है। गोरखनाथ मंदिर में होने वाले पारंपरिक तिलकोत्सव कार्यक्रम में गोरक्षपीठाधीश्वर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देंगे। शाम को परंपरागत भोज में भी हर वर्ग के लोग शामिल होंगे।

गुजरात चुनाव में बीजेपी की प्रचंड जीत के संकेत, कांग्रेस की हालत पतली

पिछले चुनाव में कांग्रेस और बीजेपी के बीच में करीबी का मुकाबला था। बीजेपी को 99 सीटें मिली थीं, जबकि कांग्रेस पार्टी को 77 सीटों पर जीत हासिल हुई थी।

करण, वाणी न्यूज

गुजरात विधानसभा चुनाव की घड़ी नजदीक आ रही है। राज्य में इस साल के अंत में चुनाव होने वाले हैं, जिसके मद्देनजर बीजेपी, कांग्रेस, आम आदमी पार्टी समेत सभी दल मैदान में उतर चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह भी गुजरात का दौरा कर चुके हैं। उधर, राज्य में पहली बार विधानसभा का चुनाव लड़ने जा रही आम आदमी पार्टी भी काफी उत्साहित दिख रही है। राज्य में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सी वोटर और एबीपी न्यूज ने एक सर्वे किया है। ओपिनियन पोल में बीजेपी की जोरदार वापसी होती हुई दिख रही है।

सी-वोटर के सर्वे में जहां बीजेपी को धमाकेदार बढ़त हासिल होती हुई दिख रही है तो वहीं, कांग्रेस को पिछले चुनाव के मुकाबले बड़ा नुकसान होने का अनुमान है। सर्वे में गुजरात की कुल 182 विधानसभा सीटों में से बीजेपी 135-143 सीटों पर कब्जा करते हुए दिख रही है। सर्वे में पार्टी को बड़ा बहुमत मिलने का अनुमान जताया गया है।

ओपिनियन पोल में कांग्रेस को महज 36-44 सीटें ही दी गई हैं। पिछले चुनाव में कांग्रेस और बीजेपी के बीच में करीबी का मुकाबला था और कांग्रेस पार्टी को 77 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। हालांकि, बाद में कई विधायकों ने पार्टी से नाता तोड़ लिया था।

हाल ही में पंजाब विधानसभा चुनाव में एकतरफा जीत हासिल करने वाली आम आदमी पार्टी गुजरात चुनाव को लेकर काफी सकारात्मक दिख रही है। पार्टी यूं तो सरकार बनाने का दावा कर रही है, लेकिन सी-वोटर के ओपिनियन पोल इससे काफी उलट हैं। पोल में आम आदमी पार्टी को शून्य से दो सीटें ही मिलती हुई दिख रही है। वहीं, अन्य के खाते में भी तीन सीटें तक जा सकती हैं।

अलग-अलग इलाकों में किसे कितनी सीटें?

गुजरात के विभिन्न इलाकों की बात करें तो सौराष्ट्र में बीजेपी को 38-42 सीटें, कांग्रेस को 11-15 सीटें, आप को 0-1 सीट, अन्य को 0-2 सीट मिल सकती है। दक्षिण गुजरात में बीजेपी 27-31 सीट, कांग्रेस, 3-07 सीट, आप 0-2 सीट और अन्य शून्य से एक सीट हासिल कर सकती है। इसके अलावा मध्य गुजरात में बीजेपी के खाते में 46-50 सीटें जा सकती हैं। यहां कांग्रेस को 10-14 सीटें ही मिलने का अनुमान है। आप को 0-1, अन्य को 0-2 सीटें मिल सकती हैं।

अमेरिका में तूफान 'इयान' ने मचाई तबाही, अब तक 70 से ज्यादा लोगों की मौत

करण, वाणी न्यूज

अमेरिका में तूफान इयान ने जमकर तबाही मचाई है। 200 किमी से अधिक की रफ्तार से चलने वाली हवाओं ने फ्लोरिडा समेत कई राज्यों में तबाही मचाई है। जिससे 70 से अधिक लोगों की जान भी जा चुकी है।

अमेरिका के फ्लोरिडा और उत्तरी कैरोलिना में इयान तूफान से मरने वालों की संख्या 70 से ज्यादा हो चुकी है। इनमें से अकेले फ्लोरिडा में 45 संदिग्ध मौत होने की सूचना है। इयान तूफान ने बुधवार और गुरुवार को फ्लोरिडा में तबाही मचाने के बाद शुक्रवार को अमेरिकी राज्य दक्षिण कैरोलिना में दस्तक दिया। इसके बाद यह शनिवार को दक्षिण-मध्य वर्जीनिया चला गया।

यह जानकारी रविवार को एनबीसी न्यूज ने अधिकारिक आंकड़ों और अपनी रिपोर्ट के आधार पर दी। एनबीसी ने कहा कि शनिवार को इस तूफान से मरने वालों की संख्या 77 हो चुकी है और यह आंकड़ा बढ़ सकता है। अमेरिकी मीडिया ने शुक्रवार को कहा कि फ्लोरिडा में इयान तूफान से कम से कम 45 संदग्धि मौत होने की सूचना है।

फ्लोरिडा में आपातकालीन प्रबंधन के निदेशक केविन गुथरी ने कहा कि राज्य में इयान तूफान से एक पुष्ट मौत हुई है जबकि 20 अपुष्ट मौतों की जांच चल रही है। फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसैंटिस के अनुसार, इयान के फ्लोरिडा में बुधवार को पहुंचने के बाद से कम से कम 1,100 लोगों को बचाया गया है। तूफान की वजह से कई लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं। तूफान के कारण राज्य के 19 लाख लोग अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। अमेरिकी मीडिया के अनुसार, शुक्रवार को दक्षिण कैरोलिना में दो लाख से ज्यादा और उत्तरी कैरोलिना में 1.38 लाख से ज्यदा बिजली की कटौती हुई। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने दक्षिण कैरोलिना में आपातकाल की घोषणा की और कहा कि इयान तूफान फ्लोरिडा के इतिहास में सबसे घातक तूफान साबित हो सकता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सीमा सिंह द्वारा प्वांइट ऑफसेट, 86/98 कुर्मी टोला गुरुगोविन्द सिंह मार्ग, लालकुआं, लखनऊ-226018 से मुद्रित एंव पहाड़पुर, पोस्ट बंथरा, लखनऊ-226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक- पंकज सिंह मो- 9415067370 E-mail:-karnvaninews@gmail.com website:- www.karnvaninews.com RNI-UPHIN/2016/74800